B.A. – I
Paper – I

Prof. Randhir Kr Singh
Dept of sociology.
Patna College. P.U

M-9546991571.

TOPIC — Classification of Groups as formulated by MacIver.

सामान्य शब्दों में समूह का अर्थ किसी भी चीज की इकाइयों का आकार में एक दूसरे से बहुत अधिक सटा इकट्ठा होता है। इन अर्थों में कुछ पेड़, गली के मकान और साईकिल स्टैण्ड पर खड़ी साईकिलें भी समूह की श्रेणी में ही आती है।

परन्तु इसे सामाजिक समूह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इन चीजों में कोई परस्पर क्रिया नहीं होती। सदस्यों में परस्पर बोध और सम्बन्धों के अभाव के कारण लोगों में जागरूकता एवं जगह जगह एकत्र (जन समूह) को भी समूह नहीं कहा जा सकता। समाजशास्त्र की परिभाषा के अनुसार समूह में क्रिया, प्रतिक्रिया और कुछ और भी अनिवार्य होता है। पुनः शारीरिक क्रिया से बढ़कर और वह है भावना जैसे planning, anticipating, persuading, propagating, educating।

बीरस्टीड के अनुसार समूह का अर्थ दो से अधिक ऐसे व्यक्तियों का सम्बन्ध है। जिनके सोच विचार का विषय एक हो, जो परस्पर एक दूसरे में उत्साह पैदा करने वाले हो, जिनकी रुचि भक्ति समान हो और जो एक जैसे कार्यों में सम्मिलित हों।

MacIver and Page की व्याख्या के अनुसार एक दूसरे के साथ परस्पर सामाजिक सम्बन्ध में बंधे हुए लोगों का एक दूसरे के इकट्ठा होना ही समूह है। समूह के कुछ लोग एक दूसरे के प्रति प्रेम और सहानुभूति प्रकट करते हैं। अतः आमतौर पर समान विचारों, आदतों और समान आदर्श के लोगों से ही समूह बनते हैं।

सामाजिक समूह सक्रिय होते हैं न कि गतिहीन। उनकी गतिविधियों और स्वरूप में जल्दी-जल्दी और धीरे-धीरे परिवर्तन होता है, वे एक कार्य को छोड़कर किसी दूसरे कार्य को.

Conti

को भी सामना करते है। इनका अपने सदस्यों पर नियंत्रण होता है तो उन्हें कुछ सामान्य लक्ष्यों अथवा नियमों की ओर ले जाते हैं। मानव-प्रकृति सब लोगों की एक समान नहीं होती बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के प्रकृति विभिन्न प्रकार की होती है। स्वभाव भिन्नता के कारण कुछ समूहों को कष्ट पहुँचना स्वाभाविक ही है। लोग अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी समूह बना लेते है।

अलग अलग लेखकों ने समूह की अलग-अलग व्याख्याएँ की है। MacIver and Page ने समूह का निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकरण किया है:—

① Size — सदस्य संख्या के अनुसार समूह छोटे और बड़े, दोनों प्रकार के होते हैं। जितने अधिक सदस्य होंगे, समूह उतना ही बड़ा होगा। इसी प्रकार जितने थोड़े सदस्य होंगे, समूह उतना ही छोटा होगा। बच्चों के पढ़ने की कक्षा और फुटबाल की टीम छोटे समूह होते हैं परन्तु राष्ट्र समूह का काफी बड़ा रूप है।

② Intimacy of the social relationship → परिवार और ग्राम जैसे कुछ समूह अति घनिष्ठ संबंधों के आधार पर बनते हैं। परन्तु जाति और राष्ट्र और नगर जैसे समूहों में घनिष्ठता कम होती है।

③ Range of Interest → हित साधना के विचार के आधार पर भी समूह बनते हैं। समूह के सामने कोई विशिष्ट हित या स्वार्थ नहीं होते। परन्तु धार्मिक या आर्थिक समूह को अपने सदस्यों के कुछ हितों की पूर्ति करनी पड़ती है।

④ Duration — कुछ समूह पर्याप्त काल तक विद्यमान रहते हैं। परन्तु कुछ समूह थोड़े समय के लिए, अस्थायी तौर पर ही बनते हैं। परिवार और राष्ट्र सार्वकालिक समूह होते हैं, परन्तु बाढ़ सहायता समिति उतनी देर तक ही रहती है जब तक कि बाढ़ का पानी कम न हो जाये और बाढ़-पीड़ित लोगों को सहायता देने का कार्य

Scanned with CamScanner

समाप्त न हो जाये।

⑤ Organisation → आर्थिक समाज जैसे कुछ समूह बहुत संगठित होते हैं परन्तु समुदाय (Community) जैसे समूह सबसे अधिक संगठित नहीं होते।

समूहों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण सम्बन्धों की घनिष्ठता के आधार पर प्राथमिक और द्वैतियक समूहों के नाम पर किया जाता है। प्राथमिक समूह आकार में छोटा होता है और इसके अन्तर्गत सदस्यों में परस्पर प्रत्यक्ष एवं आमने सामने सम्बन्ध होते हैं। "प्राथमिक समूह" शब्द का प्रयोग सबसे पहले C. H. Cooley ने किया। C. H. Cooley ने परिवार, खेलने वाली टोली और पड़ोस neighbourhood जैसे कुछ समूहों की व्याख्या करके के लिये किया था। समय और महत्व में प्राथमिक होने के कारण ही C. H. Cooley ने प्राथमिक समूह का नाम दिया। यह सिलसिला (परिवार) शुरू आती है। जिसके अन्तर्गत सदस्य एक दूसरे से प्रत्यक्ष रूप से मिलते हैं। विचार विमर्श करते हैं। सदस्यों के सुख दुख के भागीदार होते हैं। सर्वसामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं।

Maciver and Page ने इन समूहों को सभी सामाजिक संगठनों के केन्द्रक आकर्षण केन्द्र (Nucleus) और सामाजिक रचना की एकक कोशिका बताते हैं।

——— X ———